पवित्र बाइबल - २

पुराना-नियम - १

"पुराना-नियम" वह नाम है जो मसीहियों ने यहूदी पवित्रशास्त्र या बाइबल के प्रथम भाग को दिया है। जब प्रथम मसीही "पवित्रशास्त्र" में से उद्धरण देते थे तो वे यहूदी पवित्रशास्त्र में से ही उद्धत करते थे। प्रथम तथा द्वितीय सदी में नये नियम की पुस्तकें लिखी जाने के बाद मसीही लोग, यहूदी पवित्रशास्त्र को "पुराना-नियम" कहने लगे।

पुराना-नियम वास्तव में विभिन्न प्रकार की भिन्न-भिन्न पुस्तकों से बना है जिन्हें कई अलग-अलग लेखकों ने कम से कम एक हजार वर्ष के दौरान लिखा। वास्तव में, पुराने नियम का कुछ भाग तो लगभग १२०० ई. पू. तक का है। पुराने नियम की कई पुस्तकों में मूलतः ऐसे विवरण हैं जो मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी सुनाए जाते रहे। अन्ततः उन्हें लिखकर एक बड़े संकलन के रूप में एकत्र किया गया, जैसे अब्राहम के विषय में उत्पत्ति १२ से २४ तक दिए गए विवरण। पुराने नियम की पुस्तकें मूलतः इब्रानी भाषा में लिखी गईं जो इस्राएल के लोगों की भाषा थी। यद्यपि बाद की कुछ पुस्तकें या उनके अंश अरामी भाषा में लिखे गये जो कि इब्रानी ही से सम्बन्धित एक भाषा थी।

पुराना-नियम इस्राएल के अनुभवों का विवरण है, जैसे परमेश्वर कौन है और उसके लोग कैसे होना चाहिये। पुराना नियम प्रभु यहोवा परमेश्वर को विश्व का सृष्टिकर्ता मानता है और परमेश्वर का विवरण देता है कि वह आशीषों का दाता है। परमेश्वर की "आशीषों" का वर्णन इस्राएलियों के साथ बाँधी गई परमेश्वर की वाचाओं में मिलता है, जो अब्राहम से आरम्भ होती हैं। परमेश्वर ने अब्राहम और सारा से प्रतिज्ञा की थी कि उनका वंश एक बड़ी जाति बन जाएगा, और उनका अपना एक देश होगा और यह कि संसार की सारी जातियाँ परमेश्वर के साथ इस्राएल के विशिष्ट सम्बन्ध के कारण आशीष पाएँगी। परमेश्वर ने अब्राहम और उसके वंश से कहा कि सभी इस्राएली पुरुषों और लड़कों के खतने के द्वारा वे इस वाचा पर स्थिर रहें, जो कि परमेश्वर के प्रति उनकी भक्ति का एक चिन्ह रहेगा।